www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ 1000
वार्षिक शुल्क ₹ 100
एक प्रति ₹ 2.00

● वर्ष : ११७ ● अंक : ३५ ● २२ अक्टूबर, २०१३ मंगलवार कार्तिक कृष्ण तृतीया/चतुर्थी सम्वत् २०७० ● दयानन्दाब्द १९० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४

राष्ट्रभाषा हिन्दी पूर्ण समृद्ध भाषा है इससे ही भारत विश्व में सम्मान प्राप्त कर सकेगा

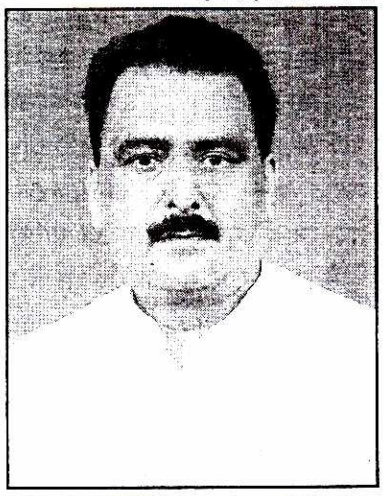

देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ से १४ अक्टूबर, १३ तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री सत्येंद्र चन्द्र आर्य, श्री अनुज शास्त्री, श्री त्रियुगी नारायण, पाठक, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के भजन व उपदेश हुये। श्री बी.डी.शुक्ल, श्री बाल कृष्ण गुप्त श्री मुकेश अग्रवाल आदि की भी समारोह में उपस्थिति उल्लेखनीय है। दिनांक १४ अक्टूबर, को दोपहर में राष्ट्रभाषा सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ सभा का संचालन श्री रामदेव अग्निहोत्री ने दिया। प्रधान जी के उत्सव स्थल पर पहुंचते ही आर्य समाज के अधिकारियों ने उनका भव्य स्वागत किया।

सभा प्रधान जी ने सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है वही उस देश की राष्ट्रभाषा कही जाती है। हमारे भारत देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है, जो विश्व के किसी भी क्षेत्र में रहने वाले सम्पूर्ण भारतीयों की राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा के द्वारा ही व्यक्ति अपने राष्ट्र के गौरव को प्रतिष्ठापित करने में समर्थ हो सकता है। हमारा देश सदियों पराधीन रहा। अंग्रेजों ने सदैव अपना गुलाम बनाये रखने के लिए हमारी संस्कृति के विनाश के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिये। लार्ड मैकाले को उसका दायित्व सौंपा गया उन्होंने अंग्रेजी के प्रचार प्रसार के द्वारा हमें सदा गुलाम बनाये रखने की भावना से अपनी शिक्षा पद्धति चलाई। उक्त शिक्षा पद्धति में केवल नौकर बनकर खाने पीने के लिए प्रयासरत रहने की भावना कूट–कूट कर भरी। अंग्रेजी को सम्पन्न भाषा तथा सभ्यों की भाषा कहकर हमारी भाषा को व हमें तिरस्कार दिया।

भारत वर्ष कभी जगत गुरु कहा जाता था। सारे विश्व के शिक्षार्थी विद्यार्जन के लिए हमारे गुरूकुलों में आकर शिक्षा प्राप्त करके अपने को तृप्त करते थे। परन्तु अंग्रेजों ने हमें असभ्य जाहिल बताकर हमें सारे विश्व में तिरस्कृत कराने का उपक्रम किया। जरा विचार करें जिस इंग्लैण्ड में स्नान कराने के लिए भी कानून बनाना पड़ा हो वह देश कैसे सभ्य संस्कृत कहा जा सकता है। परन्तु अंग्रेज हमारे देश पर अधिकार करके सत्ता के मद में हमारी देव भाषा संस्कृत व जन सामान्य की भाषा हिन्दी को पूरी तरह से मिटाने में कटिबद्ध हो गये।

पराधीनता से त्रस्त हमारे पूर्वज मनीषी देश की दुरवस्था से दुखित व चिंतित थे कि महर्षि दयानन्द ने आकर स्वराज्य प्राप्ति को अपना जन्मसिद्ध अधिकार बताकर स्वराज्य की भावना जन जन में भरी। पराधीनता के मूल में अशिक्षा, नारी शोषण, जातिवाद का भेद, ढोंग–पाखण्ड और विदेशी शिक्षा व्यवस्था को पाया और इस सबके विरूद्ध जन जागृति लाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन चलाया। स्वराज्य आन्दोलन में आर्य समाज के सर्वाधिक आर्य नर–नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अंग्रेजों ने जाते जाते हमें फूट डालो और राज करो की नीति के सहारे हिन्दू–मुस्लिम में नफरत का बीज बोया, फलतः देश के टुकड़े करके आजादी मिली। देश के विभिन्न क्षेत्रों में द्वेषाग्नि फैलाने के लिए संस्कृत और हिन्दी का प्रच्छन्न विरोध फैलाया। भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा स्वीकार किया गया परन्तु अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित कराने के लिए कुछ वर्षों का अन्तराल दे दिया गया फिर कहा जाने लगा कि हिन्दी समृद्ध नहीं है। हिन्दी में वैज्ञानिक शोध नहीं है आदि आदि। बस अंग्रेजी परस्त अंग्रेजों के मानसिक गुलाम काले अंग्रेजों ने हिन्दी को कभी भी राष्ट्रभाषा न बनने देने का षडयन्त्र रच करके दक्षिण भारत व अन्य प्रदेश में जहां की भाषा संस्कृत थी। हिन्दी के विरोध में विषवमन प्रारम्भ किया फलतः उन क्षेत्रों में हिन्दी को जानते हुये भी उसके सार्वजनिक रूप में अपनाने को तैयार नहीं हो रहे। हिन्दी आज भी राष्ट्रभाषा के पद पर स्थापित नहीं हो पा रही है। सत्ता की कुर्सी पर बैठे राजनेता अंग्रेजी को ही अपना सर्वस्व मान कर गर्व से सम्पूर्ण विश्व में सम्पर्क के लिए अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। आज आर्य समाज द्वारा स्थापित विद्यालय व कालेज भी अंग्रेजी परस्त होते जा रहे हैं। जबकि उनकी स्थापना अपनी भाषा अपनी संस्कृति की रक्षार्थ विदेशी शिक्षा पद्धति के विरूद्ध वैदिक शिक्षा पद्धति स्थापित करने के लिए की गयी थी अस्तु। आर्यों जागो। प्रमाद छोड़कर देश की स्वाधीनता के लिए संकल्प बद्ध होकर आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र करो। राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्पूर्ण विषयों में पूर्ण समृद्ध भाषा है–के गौरव सम्वर्धन के लिए स्वयं राष्ट्रभाषा के सर्वात्मना प्रयोग के लिए कटिबद्ध हो।

निश्चय ही आर्य समाज का हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठापित करने का आन्दोलन जब तीव्र होगा तभी हिन्दी अपने गौरव को प्राप्त करेगी, सारे विश्व में हिन्दी के सम्भाषण से जब हम व हमारे नेता सम्पर्क बढ़ाने का उपक्रम करेंगे तो सारे विश्व में हम सम्माननीय होंगे, हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी सभी की मार्ग दर्शिका बनेगी और हमारा देश पुनः विश्व गुरू कहलाने का अधिकार प्राप्त कर सकेगा।

वेदामृतम्

ओ३म् दिवो विष्ण उतवापृथिव्याः। महो विष्ण उरो–रन्तरिक्षात् हस्तो पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः। आप्रयच्छ दाक्षिणदोतसव्यात् अथर्व–७–२६–८

अर्थ–(विष्णोः) हे सर्वव्यापक परमात्मन् (दिव) द्युलोक से (उतवा) और (पृथिव्याः) पृथिवी लोक से (विष्णो) हे विश्वान्तर्यामिन् यज्ञ के देव (महः) महनीय (उरोः) विस्तीर्ण (अन्तरिक्षात्) अन्तरिक्ष लोक से (बहुभिः) बहुत से (वसव्यैः) ऐश्वर्य समूहों से (हस्तौ) दोनों हाथों को (पृणस्व) भर ले (दक्षिणात्) दाहिने हाथ से (आ प्रयच्छ) दान दे (उत) और (सव्यात्) बायें हाथ से भी (आप्रयच्छ) दान दे।

भावार्थ–हे जगत् पिता तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो।

–डॉ. रामनाथ वेदालंकार

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार में वेद पारायण यज्ञ

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार में दिनांक १३ से २० अक्टूबर २०१३ तक वेद पारायण यज्ञ आयोजित किया गया जिसमें विद्वान वेद पाठियों ने सस्वर वेदपाठ और अपने उपदेशों से सभी को प्रभावित किया।

दिनांक १६.१०.१३ को पारायण यज्ञ में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने यज्ञ में अपनी आहुतियां देने के साथ ही श्रोताओं को सम्बोधित करते हुये यज्ञ के सर्वांगीण महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह वही पवित्र स्थल है जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्व प्रथम पाखण्ड खण्डिनी पताका लहरा कर देश की धर्म प्राण जनता में आयी अन्ध श्रद्धा से आये विनाशकारी ढोंग पाखण्ड छोड़कर श्रद्धापूर्वक वेद ज्ञान को अपना कर शाश्वत आनन्द की प्राप्ति का मार्ग दर्शन दिया था।

उन्होंने कहा कि "यज्ञों वैश्रेष्ठतमं कर्म" यज्ञ श्रेष्ठ कर्म को कहते हैं श्रेष्ठ कर्म की समझ के लिए वेद का पढ़ना पढ़ाना अनिवार्य है। वेदानुकूल जीवन जीकर ही हम अपने यज्ञ कर्म को सार्थक बना सकते हैं और सम्पूर्ण राष्ट्र को सुखी समृद्ध बनाने में समर्थ हो सकते हैं।

कन्या गुरूकुल सासनी, हाथरस में शान्ति यज्ञ व शोक सभा

कन्या गुरूकुल शासनी हाथरस की पूर्व अधिष्ठात्री सुश्री कमला स्नातिका की स्मृति में गुरूकुल परिसर में दिनांक १५.१०.२०१३ को शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने कमला जी के गुरूकुल के लिए समर्पित जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला और कहा कि–स्नातिका जी के निधन से आज नारी की वैदिक शिक्षा आन्दोलन की एक प्रखर नेत्री का अभाव सारे आर्य जगत् को दुखी कर रहा है। डॉ. पवित्रा स्नातिका अब गुरूकुल की मुख्याधिष्ठात्री हैं पूर्ण विश्वास है कि वे कमला जी के समान ही पूर्ण समर्पण भाव से कन्यागुरूकुल का संचालन करके उनके अभाव की क्षतिपूर्ति करने में समर्थ बनेंगी। डॉ. धीरज सिंह कोषाध्यक्ष सभा सहित प्रदेश के सभी क्षेत्रों से शिक्षा प्रेमी आर्य नर नारियों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर कमला स्नातिका जी के प्रति श्रद्धा सुमन भेंट किये। डॉ. पवित्रा जी ने सबके प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपने दायित्व का पूरी निष्ठा से निर्वहण करने का आश्वासन दिया।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

जीव हत्या जघन्य पाप

जब हम किसी को जीवन दे नहीं सकते तो हमें किसी को मारने का भी अधिकार कैसे हो सकता है?

परमपिता परमेश्वर ने प्रत्येक जीव को उसके कर्मानुसार कर्मयोनि या भोग योनि में उत्पन्न किया। कर्मयोनि में कर्म करने की स्वतंत्रता और भोग की परतन्त्रता है। कर्मानुसार सुख–दुख का भोग परमात्मा देता है। भोगयोनि में कर्म की स्वतंत्रता नहीं उन जीवों के विगत कर्मो का भोग कर्म के रूप में परमात्मा उन्हें देता है उन्हीं कर्मों को करते हुए अपना भोग पूरा करता है। कर्म के परिवर्तन का उसे अधिकार नहीं है। परन्तु उनके भोग रूप में कृत कर्म सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याणार्थ ही होते हैं।

मनुष्य को कर्म करने की स्वतंत्रता दी गयी। उनके निर्धारण के लिए बुद्धि विवेक प्रभु ने दिया। कर्म अकर्म का ज्ञान देने के लिए आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान दिया हमें माता–पिता की गोद और गुरुजनों का सान्निध्य दिया। हमें कर्तव्य अकर्तव्य धर्म अधर्म को बुद्धि की कसौटी पर कसकर समझने का अधिकार दिया। जीवन की समृद्धि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्तःकरण में श्रद्धा का निरूपण किया। हम जितना जितना श्रद्धापूर्वक प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं उतना–उतना हमें उसका लाभ प्राप्त होता है परन्तु श्रम हीन विचार शून्य बनकर हम अन्ध श्रद्धा में प्रवृत्त हो जाते हैं और लक्ष्य से दूर चले जाते हैं।

आज हमारे समाज के विविध वर्गों में अन्ध श्रद्धा के फैल जाने के कारण बलि या कुर्बानी की सर्वथा गलत परम्परा पनप गयी है। कोई अपनी कामना पूर्ति के लिए नर बलि या पशु बलि का कुत्सित कार्य करते हैं तो कुछ कुर्बानी के नाम पर जीवों की हत्या का महा पाप करते हैं, अभी हाल में बकरीद पर्व पर लाखों निरीह बकरों को मारकर उसे कुर्बानी का नाम दिया गया। बकरों ने उनका क्या बिगाड़ा था वे तो निर्दोष थे। परन्तु यह दोनों पाप धर्म के नाम पर अन्ध श्रद्धा वशात् किये जाते हैं। यह रंच मात्र चिन्तना नहीं उपजती कि इससे धरती का वायु मण्डल प्रदूषित होकर हमें हानि पहुंचायेगा। जीव हत्या से उसके जो कर्त्तव्य परमात्मा ने उसे दिये हैं उन्हें वह पूर्ण न कर सकेगा। बलि का अर्थ समर्पण, कुर्बानी का अर्थ भी समर्पण ही है। दोनों का अर्थ है हम अपनी कामनापूर्ति हेतु समर्पण भाव से अपने–अपने कर्तव्य का निर्वहन करें। अपने दोषों का त्याग करें।

सभी मत सम्प्रदायों के धर्म गुरूओं का दायित्व है कि वे अपने मत व सम्प्रदाय के भक्तों को सही ज्ञान दें। बलि व कुर्बानी का वास्तविक अर्थ समझायें। नर या पशु की बलि या कुर्बानी का जघन्य पाप न करें। यह बलि या कुर्बानी नहीं पाप है। परमात्मा हमारी कृत हत्या का हमें कठिनतम दण्ड देगा हम इससे बचें। विद्वान व उलेमा धर्म के सच्चे स्वरूप को जाने समझें और उसे जन जन में फैलाने के दायित्व का निर्वाह करें और सारी सृष्टि को सुखी समृद्ध बनाने के लिए अपना अपना योगदान करके धर्म गुरु के महनीय दायित्व का वहन करें।

–सम्पादक

''आर्यों का वीर पर्व विजय दशमी''

आर्यवीर दल उ०प्र० के समस्त नगर नायक, शाखा नायक, मंडल पति, उप संचालनकों से निवेदन है कि आर्य वीरों का वीर पर्व विजयादशमी १३ अक्टूबर को धूमधाम से मनाया गया। उस दिन व्यायाम प्रदर्शन, विशेष शाखा, आसन, प्राणायाम, व्यायाम, बौद्धिक प्रतियोगिता, विशेष सामुहिक यज्ञ व खेलकूद का आयोजन आर्य समाज मन्दिर में किया गया होगा। यह क्रम सम्पूर्ण वर्ष ऊर्जा से चलाने का संकल्प लें। अधिष्ठाता से मिलकर नई शाखा का गठन कर नियुक्ति (चुनाव) ''सभा'' कार्यालय को प्रेषित करें। प्रत्येक आर्य समाज में आर्यवीर दल का होना अनिवार्य है। आर्य मित्र में प्रकाशनार्थ समाचार भेजें।

–बेचन सिंह, उप प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

आर्यो के नाम एक खुला पत्र

पं० उम्मेद विशारद, वैदिक प्रचारक, उत्तराखण्ड –

आर्य समाज के विस्तार का उपाय, नेतृत्व संगठनों का एकीकरण आवश्यक आर्य संगठनों के नेतृत्व पदाधिकारियों को सादर नमस्ते! खुला पत्र –

आर्य श्रेष्ठों हम सभी महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी हैं और हमारा प्रथम कर्तव्य आर्य समाज का विस्तार करना है, आइए इस पर विचार करते हैं। वर्तमान में आर्य जगत में सर्वत्र शिथिलता का कारण आपसी मतभेद एवं कुशल नेतृत्व का अभाव व सार्वदेशिक सभा से लेकर नीचे तक दो–दो, तीन–तीन सभाएं होने से संसार में आर्य समाज का ग्राफ गिरता जा रहा है। जो प्रत्येक आर्य के लिये चिन्ता का विषय है।

आर्य समाज की आवश्यकता आज पहले से अधिक है। आज सारे विश्व को आर्य सिद्धांतों की अति आवश्यकता है। आर्य समाज को आज अनेक चुनौतियों से जूझना पड़ रहा है। आर्य समाज आज दूसरे दौर में पदार्पण कर रहा है। पहले दौर का आन्दोलन बहुत सफल रहा है। किन्तु आज की परिस्थितियां भिन्न हैं। आर्य समाज के अधिकांश मान्यताओं को जनता ने स्वीकार कर लिया है और जो आर्य समाज के सदस्य भी नहीं हैं। परोक्ष व अपरोक्ष रूप में आर्य समाज के सिद्धांतों को स्वीकार कर चुके हैं। आज आर्य समाज को महर्षि दयानन्द जी की दूर दर्शिता वाले कार्यक्रमों को देश काल व परिस्थिति के अनुसार वर्तमान में जनता को कौन से मार्ग दर्शन की आवश्यकता है, इसके लिये क्रियात्मक आन्दोलन होना चाहिए।

दुर्भाग्यवश शिरोमणि सभाओं के नेता व अन्य आर्य, आर्य समाज की शिथिलता से आंखों को मूंद कर बैठे हैं, आर्य समाज लक्ष्यहीन कुशल सशक्त नेतृत्व के अभाव में बुरी तरह ग्रस्त है और हम अपने–अपने अहंकार के कारण हटधर्मी, पदवाद, अर्थवाद, सम्पतिवाद के झूठे विवादों में फंसे हुए हैं। अधिकांश सभाओं के झगड़े घर से निकलकर न्यायालयों में पहुँचकर आर्य समाजों की छवि खराब कर रहे हैं व धन की बरबादी हो रही है और जहाँ न्यायालय में वाद नहीं है। वहाँ पुरुषार्थी कार्यकताओं का अपमानव टांग खींचने व दोषारोपण का कार्य हो रहा है।

आर्य समाज का मंच सत्य का मंच है और महर्षि जी ने सत्य के प्रतिपादन के लिए अपना बलिदान तक दे डाला था। ना जाने हमें क्या हो गया है। हम सभी सत्य के पक्षधर होकर निष्पक्ष क्यों नहीं हो रहे हैं। आज आवश्यकता है हमें अनुचित अभिमान से बचने की आर्य जगत के अन्दर गुणवानों की कदर हमें करनी चाहिए। अगर यह बात हमारे हृदय में बैठ जाए तो हम दूसरे के गुणों का सम्मान करना सीख सकते हैं। यदि आज आर्य जगत असत्य का त्याग व सत्य का पक्षधर बन जाए तो सारे संसार को हिलाने की शक्ति आर्य समाज में आ सकती है।

आर्य जगत के सन्यासी, बानप्रस्थी व उच्च कोटि के विद्वान भी लोकेषणा व वित्तेषणा में फंसे हुए हैं आर्य समाज में सन्यासियों का बड़ा सम्मान होता है। आदर होता है। किन्तु सन्यासी वर्ग व विद्वान वर्ग न जाने क्यो मुंह बन्द किये हुए है। नितान्त सत्य है कि जब घरों में झगड़े बढ़ जाते हैं। तो सन्यासी ही सुधार सकते हैं। समझ नहीं आता क्यों, आंख मूंदकर बैठे हैं।

आर्यों एक संगठन में ही शक्ति है और विघटन में मृत्यु है। हमें अपनी आत्मा को ज्योतिर्मय बनाना है। प्राणों को दीप्त करना है। हटधर्मी व मिथ्या अभियान को जला कर नष्ट करना है। हमारा जीवन अल्प समय का है। हम आर्य समाज का उज्ज्वल इतिहास बनाने में आगे आयें। मौत को भी गले लगाकर हमें जहरीले महाविनाशक विषधर विचारों को समाप्त करना होगा।

हमें चार दीवारों से बाहर निकल कर समय के अनुकूल आर्य समाज को दिशा देनी होगी। आज की युवा शक्ति विज्ञान के युग में तदनुकूल कार्य भ्रष्टाचार का निवारण व सत्य देश भक्ति व स्वस्थ मानसिकता, धर्म, अर्थ व व्यवहार को चाहती है।

प्रार्थना, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं से

अति आवश्यक है तीनों सार्वदेशिक सभाएं आपसी विवाद भुलाकर हटधर्मी छोड़कर उच्च कोटि के निस्वार्थ सन्यासियों के समक्ष एक संयुक्त चुनाव करावें और सम्पूर्ण विश्व को सशक्त नेतृत्व प्रदान करें।

प्रार्थना आर्य प्रतिनिधि सभाओं से

सम्पूर्ण भारत की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी विनम्र भाव रखते हुए व अपनी–अपनी हटधर्मी छोड़कर जहाँ–२ दो–दो सभाएं हैं। आपसी सहयोग करके सब झगड़े समाप्त करके, संयुक्त चुनाव कराने चाहिए। प्रान्त की एक ही सभा हो।

जिलों की आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं से प्रार्थना

जिलों में जहाँ–२ उप प्रतिनिधि सभाएं हैं और आपसी विवादों के कारण दो–दो सभाएं बनी हुई हैं। उनसे भी निवेदन है कि आर्य समाज के हित में एक हो जाएं और संयुक्त चुनाव करावें/यही आज की आवाज है।

ध्यानाकर्षण

मेरा सम्पूर्ण आर्य समाज के नेतृत्व से एवं सन्यासियों से और जो आर्य समाज का विकास व हित चाहते हैं। उन सभी से निवेदन है कि आर्य समाज के संगठनों का एकीकरण करने में आगे आकर अपनी भूमिका निभाए। सारा संसार आज भौतिक युग व वैज्ञानिक युग में भी अन्ध विश्वासों से गले तक डूबा हुआ है। संसार को सन्मार्ग केवल समाज ही दिखा सकता है। क्योंकि आर्य समाज सत्य का पक्षधर है और वह भी ऋत सत्य का। आइए आर्य समाज का भविष्य बनाने में पहल करने की कृपा करें तथा इस पत्र की अपनी प्रतिक्रिया भी देवें।

प्रतिलिपियाँ –

१. आर्य जगत की सम्पूर्ण पत्रिकाओं में
२. सार्वदेशिक सभाओं को
३. आर्य प्रतिनिधि सभाओं को
४. आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं को
५. गणमान्य आर्य श्रेष्ठों को।

करवाचौथ की सार्थकता

डा० सुखदेव शास्त्री
सेवा निवृत्त, प्रधानाचार्य

भारतीय पर्व, व्रत आदि अपने मूल अर्थ के साथ–साथ अन्य प्रेरणा या शिक्षा प्रद अर्थ को प्रकट करते है जैसे दीपावली में दीपों की पंक्ति के साथ अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना। यह पर्व ऋतु तथा कृषि से भी सम्बन्धित है इसी प्रकार होली होना, तथा दशहरा, दस नये हरे अन्न कृषि से, विजय दशमी राम द्वारा रावण पर, दस इन्द्रियों पर अच्छाई से बुराई पर विजय प्राप्त करना इसी प्रकार करवा चौथ व्रत भी करवा के साथ अथवा कड़वा शब्द के अर्थ को ध्यान देकर किया जाने वाला पत्नी के इस व्रत से पति की दीघार्य की कामना है तब यह विचारणीय है किस प्रकार पति की आयु में वृद्धि होगी यद्यपि करवा एवं उसमें चावल टोटी में सीके, चन्द्रमा को देखना छलनी का प्रयोग, यह सब प्रतीक स्वरूप है इस सब पूरी प्रक्रिया से पति की आयु का केवल भावनात्मक स्वरूप रह जाता है लेकिन मन में पति के प्रति कटुता हों तो यह भाव भी समाहित नहीं होंगे यद्यपि प्रत्येक वस्तु की ओर ध्यान दिया जाय तो करवा में अन्न घन घान्य का, सीक के अन्दर बाहय शुद्धता का, चन्द्रमा को देखना शीतलता का छलनी में देखना छिद्रान्वेषण न करना आदि प्रतीत होता है। उच्चारण में शिथिलता से करवा का कड़वा अर्थ लिया जाय तो सटीक प्रतीत होता है क्योंकि कटु न बोलने से अर्थात् मृदु व्यवहार होने से ही पति की आयु बढ़ेगी। जैसे विवाह संस्कार के समय सर्वप्रथम स्वागत की जो प्रक्रिया अपनायी जाती हैं वह सम्पूर्ण जीवन में पत्नी पति के साथ भी करें तो कटुता उत्पन्न नहीं होगी जैसे कृषक खेत से, व्यापारी दुकान, नौकरी करने वाला अपनी कार्य समाप्ति पर जब घर आयें तों उसे सर्वप्रथम बैठने के लिए आसन, कुर्सी, खाट आदि, पैर मुख धोने को जल, पीने के लिए जल प्रदान करें तथा उसके बाद मधुपर्क के रूप में चाय नाश्ता जो भी हों आकर दें, पुरुष का वाहरी परिस्थितियों में जो तनाव आया है वह दूर हो जायेगा घर का वातावरण मधुर बनेगा इसके विपरीत आते ही शिकायत उलाहना, घर में कमी को कहा जायेगा तो अवश्य कटुता आयेगी। वेद में लिखा है जायेव पत्युषसी सुवासा ऋग् १०.७.४ जैसे पत्नी पति प्रेम की कामना से सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जिद होकर समर्पित होती है विवाह संस्कार में प्रतिज्ञा की जाती है "समन्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ" हम दोनों के हृदय जल के समान मिले हुए हों। ऋग् म.१०. सूक्त ८५ म. ४७ वेद कहता है अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सन्मनाः

जायापत्ये मधुमती वाचं वदतु शन्ति वान्

अथर्व का. ३ सू.३०,मं.

जैसे पुत्र माता के साथ प्रीति युक्त मन वाला अनुकूल आचरण युक्त और प्रिता के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार प्रेम वाला होवे वैसे तुम भी पुत्रों के साथ वर्ता करो। पत्नी पति की प्रसन्नता के लिए माधुर्य गुण युक्त वाणी को बोले वैसे पति भी शान्त होकर पत्नी से मधुर भाषण करें।

(अन्यत्र) स्योना भव श्वसुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः

स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव

श्वसुरादि के लिए सुखदाता, पति के लिए सुखदाता, गृहस्थ सम्बन्धियों के लिए सुख प्रद, सबको सुखदायक और पोषण के लिए तत्पर हों।

महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में मुनिवशिष्ठ और उनकी पत्नी अरून्धती के सम्बन्ध में लिखा है।

"अन्वसित अरून्धन्त्या स्वहयेव हविर्भुजम्"

वसिष्ठ मुनि के आश्रम में जब राजा दिलीप प्रवेश करते है उस समय वशिष्ठ मुनि की पत्नी अरून्धती उनकी सेवा इस प्रकार कर रही थी जैसे स्वाहा अग्नि की सेवा करता है अर्थात् मुनि की आज्ञा का पालन ही अपना परम कर्तव्य समझती थी।

भरत जब अपनी माता कैकेयी से कहते है कि तुम माता कौशल्या सुमित्रा के बीच में शोभित नहीं हो रही हो जैसे गंगा और यमुना के बीच में कोई गन्दी नदी आ गयी हो। उस पर कैकेयी ने कहा मैंने क्या किया तब भरत कहते हैं कि वह अब आप पूछती हैं ?

त्वया राज्यैषिण्या नृपति रसुभिर्नैव गणितः,

सुतं ज्येष्ठं च त्यं व्रज वनमिति प्रेषितवती।।

न शीर्ण यद् दृष्ट्वा जनक तनयां वल्कल वतीम्,

अहो धत्रा सृष्टं भवति हदयं वज्र कठिनम्।।

राज्य चाहने वाली तुमने राजा के प्राणों की चिन्ता नहीं की, तुम बन जाओं इस प्रकार कहकर बड़े भाई राम को वन भेज दिया, वत्कल धारण करने वाली सीता को देखकर तुम्हारा दिल नहीं फटा, ब्रह्म ने वज्र से भी कठोर तुम्हारे हृदय को बनाया है।

कैकेयी के ही कठोर वचनों के कारण राजा दशरथ का प्राणान्त हुआ।

विदुर जी धृतराष्ट्र को संसार के सुखों के विषय में बतलाते हैं

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया चभार्या प्रियवादिनी च।

वंशस्यः पुत्रः अर्थकरी च विद्या षड् जीव लोकस्य सुखानि राजन्।।

धन का आगमन शरीर का निरोग रहना, प्रिय पत्नी तथा प्रिय बोलने वाली, आज्ञाकारी पुत्र, विद्या अर्थ प्रदान करने वाली हो, हे राजन् जीव लोक में यह छः सुख है।

संसार के छः सुखों में प्रमुख सुख प्रिय एवं प्रिय बोलने वाली पत्नी को बतलाया गया है मृदुःभाषिणी पत्नी का प्रभाव सन्तान पर भी पड़ता है अर्थात् सन्तान भी कटुवचन बोलने वाली नहीं होगी परिवार सुखी रहेगा।

मर्तहरि का कथन, यः प्रीणति सुचरितैः पितरं सः पुत्रः यद् भर्तुरेवहितमिच्छति तत्कलत्रम्

तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यद् एतत् त्रयं जगति पुण्यक्रतो लभन्ते।

जो अपने चरित से पिता को प्रसन्न करता है वही पुत्र है, जो पति का हित चाहती है वही पत्नी है, आपति में सदा साथ दे वही मित्र है यह तीनों बड़ें पुण्यों से ही मिलते है। पत्नी का प्रमुख कर्तव्य रहा पति के हित के विषय में सोचना है जिसके मन में विरोधी भाव है वह सच्ची हितैषी नहीं है अभिज्ञान शाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास शकुन्तला को उपदेश देते हैं।

सुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखि वृतिं सपत्नी जने,।

भर्तुर्विप्र कृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः।

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत सेकिनी,

यान्त्येव गृहणी पदं युवतयः वामः कुलस्याधयः।।

सास ससुर की सेवा करना, सपत्नी के प्रति प्रिय सखि का व्यवहार करना, पति यदि क्रोधित हो भी जाय तो उनके विपरीत आचरण मत करना, परिचारकों के प्रति उदार तथा भाग्य पर कभी इतराना नहीं, इस प्रकार जो आचरण करती है वह गृहणी के पद को प्राप्त करती है किन्तु इस के विपरीत जो आचरण करती है उससे कुल को अधोगति प्राप्त होती है।

पचतन्त्र में विष्णु शर्मा लिखते हैं।

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रिय वादिनी।

अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्।।

माता जिसके घर में नहीं है और पत्नी अप्रिय बोलने वाली है तो वन में चला जाना चाहिए क्योंकि जैसा वन वैसा ही घर है। आचार्य चाणक्य ने इस पर अधिक प्रकाश डाला है

यस्य पुत्रो वशी भूतो भार्या छन्दानुगामिनी

विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हि

२/३

जिसका पुत्र वश में हो स्त्री आज्ञानुसार चलने वाली है धन की जिसके पास न्यूनता नहीं है ऐसे मनुष्य के लिए इसी संसार में स्वर्ग है।

ते पुत्राः ये पितुर्भक्ताः सःपिता यस्तु पोषकः

तन्मित्रं यस्य विश्वासः साभार्या यत्र निवृतिः

पुत्र वे ही हैं जो पिता के भक्त है, पिता वही है जो पुत्रों का पालन पोषण करता है मित्र वही है जिसका विश्वास किया जाय, स्त्री वही है जिससे सुख की प्राप्ति होती है जहां पति पत्नी में प्रेम होता है वहां स्वर्ग वास होता है

मूर्खायत्र न पूज्यन्ते धान्यं तत्र सुसज्जिवतम्

दाम्पत्यो कलहो नास्ति तत्र श्री स्वयमागता

जहां मूर्खो की पूजा नहीं होती जहां धन धान्य विपुल मात्रा में संचित है पति पत्नी में लड़ाई झगड़ा नहीं होता वहां लक्ष्मी बिना बुलाए स्वयं आकर निवास करती है

पंचतन्त्र से – पतिव्रता पतिप्राणा पत्युः प्रियहिते रता

यस्य स्यादीदृशी भार्या धन्यःस पुरुषों भुवि

प.त. ३/१५१

जिसे पतिव्रता, पति को प्राणरूप मानने वाली, पति के हित में तत्पर रहने वाली पत्नी प्राप्त हो वह पुरुष पृथ्वी पर धन्य है चाणक्य नीति के अनुसार–

साभार्या शुचिर्दक्षा साभार्या या पतिव्रता।

साभार्या या पतिप्रीता साभार्या सत्य वादिनी।।

वही पत्नी है जो पवित्र और चतुर है, जो पतिव्रता है पति से अनुराग रखती है, जो सत्य बोलती है वह मान सम्मान योग्य होती है

यस्यभार्या सुरूपा च भर्तारमनु गामिनी

नित्यं मधुरवक्त्रीच सा श्रियो न श्रियः श्रियः चा० सा० २/८२

धन को धन नही कहते किन्तु जिसकी पत्नी रूपवती,

शेष पृष्ठ......६

www.thearyasamaj.org

बापू आसाराम : भगवान या शैतान?

डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

२१ अगस्त, २०१३ को बापू आसाराम के खिलाफ, उनके ही गुरुकुल में पढ़ रही एक नाबालिग छात्रा ने दिल्ली के कमला नगर थाने में उससे किये दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया। चूंकि दुष्कर्म की दुर्घटना जोधपुर में घटित हुई थी लिहाजा मामला तुरन्त वहाँ स्थानान्तरित कर दिया गया। ऐसा करने से पूर्व दिल्ली पुलिस ने न केवल छात्रा की मेडिकल जांच कराई जिसमें दुष्कर्म की पुष्टि हुई बल्कि मनोवैज्ञानिक चिकित्सक से भी जांच कराई गई कि छात्रा मानसिक रोगी तो नहीं है। इसके साथ–साथ पुलिस ने मजिस्ट्रेट के समक्ष पीड़िता का बयान भी दर्ज कराया। दिल्ली पुलिस ने इन पुख्ता सबूतों के आधार पर बापू आसाराम के खिलाफ आई.पी.सी. की धारा–३७६ (बलात्कार), ३४२ (गलत तरीके से बंधक बनाना), ५०६ (धमकाने व डराने का प्रयास करना) और ५०६ (महिला का शीलभंग करना) के तहत मामले दर्ज किये हैं। इसके अतिरिक्त प्रीवेंशन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल अफेंसेज एक्ट (पोक्सो) की धारा आठ और जुवेनाइल जस्टिस एक्ट की धाराएँ २३ व २६ के तहत भी मामले दर्ज हैं। इन धाराओं में फंसे व्यक्ति को पुलिस द्वारा तुरन्त गिरफ्तार करने की नौटंकी ३१ अगस्त तक चलती रही। कारण, बापू आसाराम ऊँची हैसियत और ऊँची पहुँच के व्यक्ति थे अतः पुलिस उन पर शिकंजा कसने में सकुचा रही थी, घबरा रही थी। राजनीतिक और धार्मिक हस्तक्षेप के कारण ही पुलिस किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं थी बल्कि बापू आसाराम के लाखों भक्तों के उग्र होने व प्रदर्शन करने की आशंका को भी बल मिल रहा था। उनके अनुयायी फोन पर पीड़ित परिवार को जान से मार डालने की धमकियाँ भी लगातार देते रहे। गुरुडम की आड़ में उसका मनोबल गिराने की चेष्टा करते रहे। बयान बदलने का दबाव डालने व नतीजे भुगतने का खौफ दिखाते रहे। इस सम्बन्ध में पीड़ित परिवार ने पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई है। दस दिनों की इस अवधि में बापू आसाराम का भरसक प्रयास रहा कि शिकायतकर्ता और उसके माता–पिता को येन–केन–प्रकारेण डरा–धमका कर अथवा प्रलोभन देकर फुसला लिया जाये और मामले को रफा–दफा करा दिया जाये लेकिन पीड़िता इतनी आहत और माता–पिता इतने आक्रोषित थे कि भगवान के वेश में छिपे इस शैतान को सबक सिखाने को आमादा हो चुके थे। पीड़िता के पिता ने तो आसाराम की गिरफ्तारी पर दबाव बनाने के लिए आमरण अनशन भी शुरू कर दिया था। पीड़िता की माता का सीधा आरोप था कि आसाराम भगवान नहीं शैतान है और वे इससे पूर्व भी कई देवियों का इसी प्रकार शील भंग कर चुके हैं लेकिन पीड़िताओं ने शर्म–लिहाज का शिकार होकर उसकी शैतानियत का पर्दाफाश नहीं किया था। आसाराम जी के साथ रहे महेन्द्र चावला ने भी इण्डिया टी.वी. (५ सितम्बर, २०१३) पर रहस्योद्घाटन किया है कि अनेक यौन–उत्पीड़न की शिकार देवियों ने आसाराम के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराने की कोशिश की थी लेकिन पहले तो अनेक मामलों में पुलिस एफ.आई.आर. दर्ज करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई, कुछ मामलों में सादे कागज पर रिपोर्ट दर्ज कर ली लेकिन उसकी प्रतिलिपि नहीं दी, अधिकांश मामलों में जांच आगे नहीं बढ़ाई गई और बीच में ही दबा दी जाती रही। इसी चैनल ने बताया कि बापू आसाराम के अहमदाबाद आश्रम से आठ किलोमीटर दूर एक ऐसी ऐशगाह है जिसका दुरुपयोग आसाराम महिलाओं का यौन शोषण रात के समय करने के लिए करते थे। टार्च की रोशनी से वे अंधेरे में अपना शिकार ढूंढ़ते थे और उस शिकार को बापू तक पहुँचाने का दायित्व आश्रम की कुछ सेविकाएँ या साध्वियाँ करती थीं। जोधपुर में यौन–उत्पीड़न की शिकार नाबालिग छात्रा को भी शिल्पी नामक वार्डन ने बापू आसाराम तक पहुँचाने में मदद की थी। अधिकांश पीड़ित पक्ष जानते थे कि बापू आसाराम एक क्रूर व्यक्ति है जो अपने विरोधी को जान से मारने तक की हद कर जा सकता है अतः वे उसकी शिकायत करने से बचते रहे। इसी दिन इसी इण्डिया टी.वी. चैनल पर अघोरी सुखाराम का एक स्टिंग आप्रेशन दिखाया गया जिसमें बापू आसाराम ने भूमि घोटाले में उसका पर्दाफास करने वाले छह व्यक्तियों प्रफुल्ल पटेल (प्रेस संवाददाता), श्रेयांस शाह, वैद्य पुष्पेन्द्र, दिनेश (पूर्व ड्राइवर), अमृत प्रजापति (आश्रम में रहा था) और चन्द्रशेखर (दिल्ली के एक पुराने मित्र) को तन्त्र विद्या द्वारा जान से मारने की सुपारी देने अपने एक विश्वासपात्र मिश्रा जी को बड़ौदा से इन्दौर भेजा था। 'आज तक' टी.वी. चैनल ने भी तीन वर्ष पुराना एक ऐसा स्टिंग आप्रेशन दिखाया है जिसे एक अर्टिटेक्ट पूनम नाम की रिपोर्टर ने हरीश व दीपक शर्मा के साथ मिलकर अंजाम दिया था। इसमें पूनम ने अपने को अमरीका की गुनहगार बताकर बापू आसाराम से गुहार लगाई थी कि उसे अपनी शरण में लेकर पुलिस से बचाया जाये। आसाराम ने उसे आश्वस्त किया कि उनके यहाँ तो मुख्यमंत्री तक चरण स्पर्श करने आते हैं, पुलिस यहाँ पंख भी नहीं फड़फड़ा सकती। आसाराम ने उसे नदी पार ले जाकर एकांत में मंत्र देने के लिए फुसलाया लेकिन वह तैयार नहीं हुई क्योंकि उसे उनकी मंशा में खोट नजर आया था। इन तमाम घटनाओं से पता चलता है कि बापू आसाराम साधक कोटि के व्यक्ति न होकर वाचाल, ढोंगी, अंधविश्वासी, दुराचारी और आपराधिक मानसिकता के व्यक्ति हैं। उनके अधिकांश आश्रमों में जबरन कब्जा करके जमीन मिलाई गई है। सागर, सिरमौर, कोटा, इन्दौर, नासिक, भीलवउड़ा, छिंदवाड़ा, जम्मू, दिल्ली आदि स्थित उनके आश्रम जांच के घेरे में आ चुके हैं। कुछ पर बुलडोजर भी चल चुके हैं।

बापू आसाराम ने पहले तो नाबालिग छात्रा को अपनी पोती के समान मानने की बात कही। फिर अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अपने को नपुंसक घोषित किया। अपने बुढ़ापे को भी उन्होंने ढाल बनाने का प्रयास किया। लेकिन डॉक्टरों ने जब उनका पोटेंसी टेस्ट किया तो वे नामर्द नहीं मर्द सिद्ध हुए। सैक्स विशेषज्ञों ने अपना अलग से परामर्श दिया कि सैक्स की एक्सपायरी डेट नहीं होती, बुढ़ापे में सैक्स की फ्रीक्वैंसी कम हो सकती है। नाबालिग छात्रा का आरोप है कि जोधपुर में घटित घटना से पूर्व भी वे दो बार उनसे अश्लील हरकतें कर चुके थे। वार्डन शिल्पी इस घटना की मुख्य किरदार है अतः वह पुलिस के हत्थे चढ़ने से बचने के लिए कोर्ट से अपनी अग्रिम जमानत कराने का प्रयास करती आ रही है। बापू आसाराम को निर्दोष सिद्ध करने के लिए उनके भाड़े के कतिपय प्रवक्ता निरन्तर टी.वी. चैनलों पर आते रहे हैं। बापू आसाराम को उन्होंने सच्चे संत व जन सेवक के रूप में पेश करते हुए कहा कि उन्हें बदनाम करने के लिए सोनिया व राहुल ने षड्यन्त्र रचा है क्योंकि बापू ने उनके विरुद्ध टिप्पणी की थी। क्या स्टिंग आप्रेशन भी सोनिया राहुल ने कराये थे ? ये भी कहा गया कि बापू का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए समय–समय पर अशोक गहलौत, कमलनाथ, फारुख अब्दुल्ला, मोहन भागवत, शिवराज सिंह चौहान, राजनाथ सिंह, अटल बिहारी बाजपेयी जैसी राजनीतिक हस्तियाँ उनका सान्निध्य प्राप्त करती रही। इसमें कोई दो राय नहीं कि अंधविश्वास का शिकार होने के कारण आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अथवा बड़े मंच से अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लोभ में अथवा वोट बैंक बढ़ाने के चक्र में अथवा ढोंगी साधुओं द्वारा फैलाये जाल में फंसने के कारण राजनीतिक लोग प्रायः ऐसे साधु–संतों का सान्निध्य प्राप्त करने को लालायित रहते हैं। इससे इन तथाकथित बाबाओं की मार्किट वैल्यू आम जनता के बीच उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है और वे एक दिन ईश्वरावतार माने जाने लगते हैं। यह कह कर भी बापू को महिमा–मण्डित किया गया कि देश–विदेश में उनके ४२५ आश्रम हैं जिनमें से १७० तो अकेले भारत में व ४५ गुजरात में हैं। १४०० सोसायटियाँ और ५० गुरुकुल उनकी ओर से चलाये जा रहे हैं। उनके १५००० बाल सुधार केन्द्र भी हैं। उनकी दस हजार करोड़ की सम्पत्ति और हजारों एकड़ जमीन है जिस पर बने आश्रमों के माध्यम से उनका मिशन पूरी दुनिया में चल रहा है। उनके अनुयायियों की संख्या चार करोड़ बताई जाती है। बापू की गिरफ्तारी का विरोधी करने के लिए इन अनुयायियों ने जगह–जगह धरने प्रदर्शन किये, ट्रैक बाधित किया, हंगामा बरपाया लेकिन बापू के विरुद्ध आरोप इतने पुख्ता थे, देश का प्रिण्ट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया इतना सक्रिय था कि बापू आसाराम व उनके समर्थकों का कोई दाँव नहीं चल पाया और बापू को पहले पुलिस रिमाण्ड पर तथा फिर न्यायायिक हिरासत में जेल में जाना पड़ा। जेल जाकर उन्होंने नया राग अलापा कि उन्हें त्रिनाड़ी शूल का रोग है जिसका उपचार एकांत में एक महिला वैद्य करती है अतः यह सुविधा उन्हें प्रदान की जाये। लेकिन कोर्ट ने इसकी स्वीकृति नहीं दी और उनकी मेडिकल जांच कराई गई। उनके नौकर शिवा ने भी पुलिस के सामने बापू आसाराम के कई राज खोले बताये हैं, लेकिन बापू के प्रवक्ताओं का दावा है कि पुलिस के दबाव में आकर शिवा बयान दे रहा है जो हकीकत से कोसों दूर है। राजेश रसोइया भी अभी तक फरार है जो कई राज उगल सकता है। ये फरारी स्वतः सच उगलती है।

बापू आसाराम और उनके प्रवक्ताओं की रणनीति यह है कि बापू को निरन्तर निर्दोष प्रचारित किया जाये। निचली कोर्ट में यदि वे दोषी पाये जाते हैं तो इसके विरुद्ध हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट तक केस लड़ा जायेगा। केस को प्रभावित करने के लिए जोधपुर के डी.सी.पी. अजय लाम्बा को फोन पर जान से मारने की धमकी दी गई व एडीशनल एस.पी.चंचल मिश्रा को घूस की पेशकश की गई। राजस्थान सरकार को आगामी चुनाव में अंजाम भुगताने की धमकियाँ दी गई। लेकिन इस समूची कवायद का कोई नतीजा नहीं निकला। बापू आसाराम को पहली बार अहसास हुआ है कि वे पूरी तरह नंगे हो चुके हैं और सज़ा उनको मिल कर रहेगी। जाल में फंसी मछली की तरह पहले वह खूब उछले–कूदे लेकिन अब वे शांत हैं और उनके प्रवक्ताओं और वकीलों की टोली सक्रिय है ताकि उन्हें किसी तरह जेल से बाहर निकाला जा सके। उनका कोर्ट केस लड़ने के लिए अब रामजेठ मलानी जैसे धाकड़ वकील को मोर्चे पर तैयार किया गया है।

बापू आसाराम को निर्दोष करार देने के लिए संघ परिवार, विश्व हिन्दू परिषद् और संत समाज की मदद् भी इस दौरान लेने की कोशिश की गई लेकिन मीडिया के सक्रिय होने पर यह दाँव भी खाली गया। उमा भारती, सुषमा स्वराज, अशोक सिंघल, मोहन भागवत, स्वामी रामदेव आदि ने बापू आसाराम के सन्दर्भ में जो तेवर दिखाये उससे यह संकेत फैलाने का प्रयास किया गया कि हिन्दू धर्म और संत समाज को बदनाम करने की मानो देश में कोई गहरी साजिश चल रही है। इस स्थिति पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी गई कि पिछले नौ महीने में केवल दिल्ली में ग्यारह सौ मामले दुष्कर्म, शील भंग, बलात्कार के हो चुके हैं और साल भर में पूरे देश में इन मामलों की संख्या बारह हजार से ऊपर पहुँच चुकी है। बलात्कारी का कोई समाज, कोई धर्म, कोई जाति नहीं होती और न ही उसके रुतबे को देख कर मामले तय होते हैं अतः किसी दुष्कर्मी, बलात्कारी को बचाने की कोशिश करना निन्दनीय है। बापू आसाराम पर

शेष पृष्ठ.....५

पृष्ठ.....४ का शेष

बलात्कार का आरोप नया नहीं है, पहले भी वे विवादों से घिरे रहे हैं। आज से लगभग १५–२० वर्ष पूर्व दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित ऋषि दयानन्द निर्वाणोत्सव पर गुजरात के श्री धर्मबन्धु ने खुले मंच से कहा था कि जिस बापू आसाराम को उत्तर भारत में भगवान मानकर पूजा जाता है, उसे गुजरात में शैतान माना जाता है, उस पर बलात्कार के आरोप हैं। सबल पक्ष पुलिस व अदालतों को भी प्रभावित कर लेता है इसलिए बापू आसाराम असहाय पक्षों पर हावी बने रहे। वर्तमान मामले को पुलिस पुख्ता मानकर चल रही है लेकिन अदालत में सुप्रीमकोर्ट के धाकड़ वकीलों का सामना जब पुलिस और पीड़ित पक्ष का होगा तब पता लगेगा कि मामला वास्तव में कितना पुख्ता या खोखला है।

देश के सक्रिय मीडिया ने आसाराम के पक्ष में आए हुए संतों, नेताओं, प्रवक्ताओं को जिस ढंग से आड़े हाथों लिया है उससे भी बापू की सांसे फूलती नजर आई और उन्होंने कोर्ट से अपील की कि मीडिया को उनके दुष्प्रचार से रोका जाये लेकिन यहाँ भी उन्हें सफलता नहीं मिली। बापू की छवि यौन शोषण के कारण ही खराब नहीं है बल्कि काला जादू, भूमि घोटाला, हत्याओं में संलिप्तता के सन्दर्भ में भी उन्हें व उनके प्रवक्ताओं को मुखातिब होना पड़ रहा है। जोधपुर पुलिस का प्रयास है कि इन सब मामलों में भी बापू आसाराम को लपेट लिया जाये ताकि आजीवन उनको खुली हवा नसीब न हो। जब भी कोई अपराधी पुलिस के हत्थे चढ़ता है तो उसके जुल्मों की तह एक–एक कर खुलने लगती है। जो पीड़ित बापू आसाराम से भयभीत होकर उनके विरुद्ध मुँह नहीं खोलते थे अब वे भी मीडिया और पुलिस की आश्वस्ति पर कुछ बोलने को तैयार नजर आने लगे हैं। एकाध पक्ष झूठ बोल सकता है लेकिन सभी पीड़ित पक्षों को झूठा करार देना तर्कसंगत नहीं है।

निःसन्देह बापू आसाराम एक सबल, प्रभावी, नीतिकार व्यक्ति हैं और अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए वे साम, दाम, दण्ड भेद की नीति अपनाने में सक्षम हैं। संत समाज और राजनीतिक क्षेत्र में भी उनकी गहरी पैठ है अतः अपने को निर्दोष सिद्ध करने में इन सभी हथकंडों का उपयोग भी वे आसानी से कर सकते हैं। पैसे की उनके पास कोई कमी नहीं अतः सुप्रीम कोर्ट तक वे अपने वकीलों की मार्फत केस को अनन्त काल तक लम्बा खींच कर निर्दोष बने रह सकते हैं। बापू को अपने को निर्दोष सिद्ध करना इसलिए भी जरूरी है कि यौन शोषण के मामले में अगली तलवार उनके बेटे के सिर पर भी लटकी हुई है अतः उत्तराधिकारी का भविष्य भी चौपट होने की आशंका है। ऐसे में वे पुलिस और मीडिया को खरीदने की भी कोशिश करें तो आश्चर्य नहीं। इस समूची स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि बापू आसाराम के मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट के सुपुर्द किया जाये। यौन शोषण के साथ–साथ काला जादू, भूमि घोटाला, हत्याओं में संलिप्तता, जिसे चाहे सार्वजनिक रूप से अपमानित करने, टैक्स चोरी आदि के जो आरोप समय–समय पर उन पर लगते रहे हैं उन सबकी जाँच भी सी.बी.आई. से कराई जानी चाहिए। इन आरोपों की लम्बी फहरिश्त है अतः बापू आसाराम को किसी प्रकार की रियायत या छूट देना खुद में एक गुनाह होगा। सरकार, पुलिस, प्रशासन, जांच एजेंसियों को समझना होगा कि भारतीय समाज में संत का प्रतिष्ठित स्थान होता है, लाखों–करोड़ों लोगों की आस्था, विश्वास, संवेदना का वह प्रतीक होता है अतः जब भी उन पर हाथ डाला जाये तो वह हाथ कमजोर नहीं मजबूत होना चाहिए। देश का मीडिया जो मजबूती दिखा रहा है वह मजबूती इनमें भी होनी चाहिए। शातिर अपराधी अपने जुर्म के सबूतों व गवाहों को नष्ट करने में तत्पर रहता है अतः ऐसे मामलों में ढिलाई से नहीं, मुस्तैदी से कार्रवाई होनी चाहिए।

एक सच्चे संत के रूप में बापू आसाराम का नैतिक कर्त्तव्य यह बनता था कि वे स्वेच्छा से अपराध स्वीकार कर प्रायश्चित करते जैसे महर्षि बाल्मीकि, अंगुलिमाल, संत तुलसीदास व सूरदास ने किया था। लेकिन बापू आसाराम ने तो संत की परिभाषा और कसौटी दोनों बदल कर रख दी है। अतः वे किस–किस अपराध के लिए प्रायश्चित करेंगे? पुत्रैषणा, लोकैषणा और वित्तैषणा उनमें कूट–कूट कर भरी हुई है और इनकी परिणति वासना में जाकर ही होती है। बापू आसाराम अपने आचरणों से, वासनाओं से, एषणाओं से खुद के पतन का जीवन चरित्र लिखते रहे हैं जो उनके प्रवचनों, पुस्तकों, कैसेटों से कहीं भी मेल नहीं खाता। एक जन विश्वास होता है जो किसी को महिमा मण्डित करता है, किसी को आस्था के उच्चासन पर बैठाता है, किसी में भगवान की अथवा ईश. तत्व की अनुभूति कराता है, अध्यात्म का रसास्वादन कराता है, मन, वचन, कर्म में शुद्धता, पवित्रता, दिव्यता का अहसास कराता है लेकिन वही जन विश्वास जब आहत होता है तो यह समूची स्थिति, समूचा परिवेश, समूचा प्रभाव विगलित होने लगता है, तिरोहित होने लगता है, निष्प्रभावी होने लगता है। बापू आसाराम को लेकर आज ऐसी ही स्थिति बनती जा रही है। भले ही वे कोर्ट से बरी हो जायें लेकिन एक अदालत परमात्मा की भी होती है, एक अदालत जनता की भी होती है उससे वे कैसे वरी होंगे? धूआँ वहीं उठता है जहाँ आग जलती है अतः बापू आसाराम को सर्वथा निरपाध मानने का कोई कारण नहीं है। उन पर एक नहीं अनेक आरोप समय–समय पर लगते रहे हैं। किसी को लात, किसी को घूंसे तो किसी को अपशब्दों का प्रसाद अहंकार के वशीभूत होकर वे देते रहे हैं, फिर भी अपने को संत कहलाते रहे हैं।

बापू आसाराम को इस ऊँचाई तक पहुँचाने में मीडिया, प्रशासन, राजनेताओं और अन्ध–भक्तों की भूमिका भी कम जिम्मेदार नहीं है। टी.वी. चैनल विज्ञापन के प्रलोभन में कथित साधु संतों को अवसर प्रदान करते हैं और धर्म–अध्यात्म, ज्ञान के पिपासु ढोंगी संतों के आसानी से शिकार हो जाते हैं। बापू आसाराम कोई आध्यात्मिक विभूति नहीं, मात्र कथावाचक है, वे, तपोव्रती नहीं माया के दास मात्र हैं, यम–नियम उनके जीवन में कहीं दिखाई नहीं देते अतः कैसे उन्हें संत मान लिया गया है? जन जीवन में जब तर्क गौण और श्रद्धा मुखर होने लगती है तब आसाराम जैसे शैतानों में भगवान की अनुभूति का भ्रम लाखों लोगों में पैदा होने लगता है। वैदिक वाड.मय में जब हमारी रुचि, विश्वास, आस्था, श्रद्धा न रहेगी, यम–नियम के रहस्य को जब हम समझने व अपनाने में असफल रहेंगे, ऋषिवर दयानन्द सरीखी पुण्यात्माओं से हम परहेज रखकर चलेंगे, आर्य समाज जैसी संस्थाओं की अनदेखी कर आगे बढ़ेंगे तो बापू आसाराम जैसे संतों के यहाँ अपनी आबरू ही लुटवायेंगे। ढोंगी साधुओं और संतों द्वारा हम बार–बार ठगे जाते हैं, लूटे जाते हैं लेकिन फिर भी उनके प्रति हमारा आकर्षण और विश्वास कम नहीं होता। आर्य समाज ने पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास, रूढ़ियों व कथित आस्थाओं के विरुद्ध सशक्त मोर्चा लेते हुए वेद की ज्योति जलाई थी जो आज मंद पड़ गई है क्योंकि वह मार्ग यम–नियम, वैराग्य, अभ्यास और अनासक्ति का है जिसे जन–साधारण अपनाने में कठिनाई अनुभव करता है। वह ऐसा उपाय ढूँढ़ता है जो सस्ते में स्वर्ग की टिकट कटा दे और दुनियादारी भी यथावत चलती रहे। ये उपाय वेद के पास नहीं आसाराम जैसे ढोंगी संतों के पास उपलब्ध हैं अतः भीड़ उन्हें घेरे रहती है। अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता, अपनी परम्परा को हम भूल बैठे हैं, यही कारण है कि आर्य समाज अपनी लोकप्रियता शनैः–शनैः गंवाता जा रहा है। देश के इलेक्ट्रानिक व प्रिण्ट मीडिया पर संतों–महंतों की भरमार रहती है जबकि आर्य समाजियों में कभी–कभार स्वामी अग्निवेश या वेद प्रताप वैदिक अवश्य दिख जाते हैं। इसे देश का दुर्भाग्य ही माना जायेगा कि भारतीय पुनर्जागरण में ऋषि दयानन्द व आर्य समाज के योगदान की अनदेखी कर ढोंग, पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास, गुरुडम, फैलाने वाले संतों, महंतों कथावाचकों को मीडिया पर तरजीह दी जाती है। उन्हें विज्ञापित किया जाता है, महिमा मण्डित किया जाता है। उत्तराखण्ड में आई प्राकृतिक आपदा ने हजारों लोगों का प्राण–हरण कर लिया, गाँव व नगर जलधारा में समा गये, मन्दिर व होटल देखते–देखते बह गये लेकिन बजाय इस आपदा के कारण खोजने के राहत कार्य करने के, केदारधाम को पुनः महिमा मण्डित करने के प्रयासों को प्राथमिकता दी गई। इतना ही नहीं बल्कि केदारधाम के साथ–साथ उस शिला को भी दिव्य शिला के रूप में महिमा–मण्डित करने के प्रयास ही रहे हैं जिसका वजह से जलधारा का प्रवाह बदला और मन्दिर बच गया। अब केदारनाथ के साथ–साथ इस भव्य शिला का पूजन भी आरम्भ हो जायेगा। यह है हमारी आस्था, अन्धविश्वास, अज्ञानता का नमूना जिसके बल पर हम भारत को पुनः विश्व का गुरु बनाने को उद्यत हैं। इस मानसिकता को लेकर ही यदि हम जीवित रहना चाहते हैं तो इस देश में बार–बार आसाराम जैसे ढोंगी संत ही महिमा–मण्डित होंगे न कि ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द सरीखे प्रज्ञावान महात्मा।

यदि हम ईमानदारी से चाहते हैं कि इस देश में बापू आसाराम जैसे तथाकथित संत नामशेष हो जायें तो हमें पुनः आर्य समाज को सशक्त, सक्रिय और प्रभावी बनाना होगा। आत्ममंथन कर हमें विचार करना चाहिए कि आर्य समाज के संगठनात्मक ढांचे की आज क्या दुर्दशा है, उसका प्रचारात्मक ढांचा इतना शिथिल क्यों हो गया है। उसका आन्दोलनात्मक स्वरूप निष्प्रभावी क्यों हो चुका है, उसका तपस्वी, और वर्चस्वी नेतृत्व कहाँ विलुप्त हो चुका है, उसका रचनात्मक स्वरूप कुंठित क्यों होता जा रहा है, उसके वैचारिक स्वरूप में जो तर्क और तीखापन रहता था वह तिरोहित क्यों होता जा रहा है तथा आर्थिक स्वावलम्बन की दृष्टि से हमारे गुरुकुल व आर्य समाज की प्राथमिक इकाइयाँ मोहताज क्यों बनती जा रही है? आर्य समाज ने जिस पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास से कभी सशक्त मोर्चा लिया था वही सब कुछ पुनः बरसाती घास की भांति पनपने लगा है। हम साप्ताहिक सत्संगों में आर्य समाज की चारदीवारी के भीतर भले ही कितना प्रचार क्यों न करें, यह विषम स्थिति बदलने वाली नहीं है। पौराणिकों, इसाइयों, मुसलमानों, ब्रह्मकुमारियों व सिखों के अनेक टी.वी. चैनल हैं। इसके विपरीत आर्य समाज का एक भी चैनल नहीं है तो सच्चे धर्म, अध्यात्म व दर्शन का प्रचार कौन करेगा? हमारे अपने भीतर आर्य समाज को लेकर जो शिथिलता पैदा हो गई है वही उन तमाम रोगों का मूल है जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। एक आम आर्य समाजी को जगाने व सक्रिय करने का दायित्व जिन सभाओं पर था वे खुद सो रही हैं, निष्क्रिय हैं। यह व्यवस्था बदलनी होगी यदि हम ढोंगी संतों–महंतों का सफाया इस धरा–धाम से चाहते हैं आर्य समाज की आवाज यदि बुलंद रहती तो देश में अनैतिकता, अनाचरण, अत्याचारों का ऐसा भीषण दौर कदाचित न रहता। घर की दीवारें कमजोर होने पर ही घर में चोर, सेंधमारी करते हैं। आर्य समाज अपनी ही कमजोरियों का शिकार होकर कमजोर पड़ गया है और बाहरी तत्व इसमें घुसपैठ कर इसकी सम्पदा व वैभव को लूट रहे हैं। इस स्थिति को समझने व सुधारने की आवश्यकता है। आर्य समाज सशक्त और सक्रिय होगा तो परिवेश में बदलाव आयोग जिसमें बापू आसाराम जैसे संतों का सांस लेना कठिन हो जायेगा।

वैदिक सार्वदेशिक से साभार ...

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ.....३ का शेष

पति के अनुकूल चलने वाली, सदा मीठा बोलने वाली है वस्तुतः वही श्री–गृह लक्ष्मी है। मनु कहते है पति पत्नी में जहां मेल होता है वहां कल्याण वास करता है।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैवच
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्

जिस कुल में भार्या से प्रसन्न पति, पति से भार्या सदा प्रसन्न रहती है उसी कुल में निश्चित कल्याण होता है। जहां पति पत्नी में प्रेम नहीं होता है उनका जीवन नरक हो जाता है

दुष्ट भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तर दायकः
ससर्पे गृहवासों मृत्युरेव न संशयः चा० १/५

कटुभाषिनी स्त्री, धूर्त मित्र, उत्तर देने वाला नौकर, सर्प वाले घर में रहना मृत्यु स्वरूप ही है इसमें कोई सन्देह नहीं।

दम्पत्योः समता नास्ति, यत्र यत्र हि मन्दिरे।
अलक्ष्मीस्तत्र तत्रैव विफलं जीवनं तयोः।

जिस जिस घर में पति पत्नी में समता नहीं है वही वही निर्धनता है उन दोनों का जीवन निष्फल है।

कुर्धमवासः कुल हीन सेवा कुभोजनं क्रोध मुखी च भार्या
पुत्रश्य मूर्खो विधवा च कन्या विनाऽग्निना षड् प्रदहन्ति कायम्

कु ग्राम में निवास कुलहीन की सेवा, कुभोजन क्रोध मुखी पत्नी, मूर्ख पुत्र, विधवा कन्या ये छः बिना अग्नि के ही शरीर को जलाते हैं।

त्यजेद्धर्म दयाहीनं, विद्या हीनं गुरुंत्यजेत्।
त्यजेत् क्रोधमुखी भार्या, निःस्नेहान् वान्धवांत्यजेत्।।

मनुष्य को दया रहित धर्म को विद्याहीन गुरु को, क्रोध मुखी पत्नी को स्नेह रहित बन्धुओं को छोड़ देना चाहिए।

विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्यमित्र गृहेषुच
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्र मृतस्य च।

विदेश में विद्या मनुष्य का सच्चा मित्र होता है घर में शील गुण नारी सच्चा मित्र है रोगी को औषधि मरे हुए मनुष्य का धर्म ही मित्र होता है।

पति की आज्ञा के बिना व्रत के विषय में आचार्य चाणक्य लिखते हैं।

पत्युराज्ञां बिना नारी उपोष्य व्रत चारिणी।
आयुष्यं हरतेभर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत।
चा.नी. ७/१६

जो स्त्री पति की आज्ञा के बिना भूखों मरने वाला व्रत रखती है, वह पति की आयु को घटाती है वह नरक में गिरती है (कष्ट भोगती है)

पत्यौ जीवति यातु स्त्री उपवासं व्रतं चरेत।
आयुष्य हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति।। मु.५१५५

जो पति के जीवित रहते हुए व्रत (उपवास रखती है वह अपने पति की आयु को घटाती है स्वयं नरक में जाती है)

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधयः कान्ता प्रियलापिनी।
सुधानं सन्मित्रं स्वयोषितरतिः स्वाज्ञापरा सेवकाः।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे,
साधो संगमुपासते च सततं धन्यो गृहस्थाश्रमाः।

जहां सदा आनन्द की तरंगे उठती हो पुत्र और पुत्रियां बुद्धिमान् और बुद्धिमती हो पत्नी मधुर भाषणी हो परिश्रम–ईमानदारी से कमाया धन हो, संकट के समय काम आने वाला मित्र हो, पत्नी में प्रेम हो, नौकर आज्ञाकारी हो, अतिथियों का आदर सत्कार होता हो, परमेश्वर की उपासना, घर में प्रतिदिन मीठे मधुर भोजन पेयों की व्यवस्था हो सदा सज्जनों के संग की उपासना होती, हो वह गृहस्थ आश्रम धन्य है।

इस प्रकार पत्नी के द्वारा पति के साथ मधुर व्यवहार से ही पति की आयु में वृद्धि होगी तभी करवाचौथ के व्रत की सार्थकता है।

मिलक (रामपुर)

प्राणों से छन्द और छन्दों से सृष्टि तत्वों का सम्बन्ध

–श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

आचार्य पं० वीरसेन वेदश्रमी जी अपनी 'वैदिक सम्पदा' की भूमिका में 'देवता, ऋषि और छन्द के बारे में अनेक प्रकार वर्णन किये हैं। मैंने उनमें से उनके थोड़े से ही विषयों को इस लेख में उद्धृत किया है।

'पृथ्वी छन्दोंन्तरिक्ष छन्दो द्यौशच्छन्दः। (यजु० १४,१६)

पृथिवी छन्द है क्योंकि इसमें 'अग्निदेवता' की व्याप्ति रहती है, या यह अग्नि की व्याप्ति का क्षेत्र है। अन्तरिक्ष छन्द है। इस छन्द में वायु का छादन कर्म होता है। वातो देवता का यह क्षेत्र है। द्यौ छन्द है। इस छन्द में सूर्यो देवता की व्याप्ति है (यजु० १४,२०) इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, इन्द्रादिदेव अपने व्रत के अनुष्ठान में अर्थात छन्द से आबद्ध होकर रहते हैं। अतः समस्तविश्व अपने अपने अक्षर मात्रा पद क्रम आदि से सुसम्बद्ध नियमें पूर्ण रूप से छन्द मय है। वेद ने इसी स्थिति को 'गायत्रे त्रैष्टभंजगत् रूप से प्रकट किया है।'

ऋषि का अर्थ प्राण–

प्राणों को भी ऋषि कहते हैं। समस्त जगत् में महान वैश्वानर प्राण ओत प्रोत है। विश्व के अन्दर जौ देवता क्रम से छन्द क्रम से रचना है उसी क्रमानुसार उसी विश्वप्राण के भी पृथक–पृथक नाम एवं संज्ञाये ऋषिनाम से भी है। अतः ऋषि भी समस्त विश्व में व्याप्त हैं। वेद में– 'अन्तरिक्ष ऋषयः' कहकर अन्तरिक्ष में भी उनकी व्याप्ति और क्रियाओं का निर्देश किया है।

यह ऋषितत्व देवताओं का प्राण है। प्राणहीन देवता में दवत्व ही क्या? ऋषिहीन देवता की कोई स्थिति नहीं। देवता और ऋषिहीन मंत्र की भी कोई स्थिति नही है मंत्रों के साथ देवता की स्थिति अनिवार्य है। इस कारण बिना ऋषि और देवता ज्ञान के मंत्र के अर्थ का यथार्थ दर्शन नहीं हो सकता है। अतः ऋषि का तात्पर्य विश्व के प्राणतत्व तथा मंत्र की दर्शन शक्ति का भी होता है।

वैदिक विज्ञान में ऋषि देवतादि ज्ञान की आवश्यकता

वेद की विद्या या वेद के विज्ञान में सबसे प्रमुख आवश्यकता दैवतज्ञान की है। देवता के गुण धर्मों को जानकर उनसे अनुकूल व्यवहार सिद्ध करने के लिये उनके ब्रह्माण्ड में स्थानों को ज्ञात करने की आवश्यकता है। एक देवता के विभिन्न स्थानों से जो–जो विविध गुण प्रकट हो रहे हैं उन–उनसे ही लाभ लेने के लिये मंत्रों के ऋषि, छन्द और स्वरों का ज्ञान आवश्यक है। क्योंकि ऋषि एवं छन्दों द्वारा देवता के गुणों का विशिष्ट सीमित क्षेत्रों में विभाजन हो जाता है जिससे इच्छित प्रयोग करने में सुविधा होती है।

छन्दक्रम से ब्रह्माण्ड का विभाजन कर लेने पर वैदिक विज्ञान के प्रयोगात्मक व्यवहार में अत्यन्त सुगमता हो जाती है।

छन्दो की महत्वपूर्ण रचना–

छन्द की सबसे छोटी इकाई एक अक्षर की है। परमात्मा स्वयं भी अक्षर है। इस प्रकार क्रम से एक से दो, दो से तीन, तीन से चार अक्षर वृद्धि को प्राप्त होते हुए छन्द २४ अक्षरों में आ जाते हैं, तब छन्दों का एक उत्तम पूर्ण एवं प्रारम्भिक व्यवहार योग्य छन्द गायत्री के रूप में अपना आवेष्टन हमारे चारो ओर बना देता है। सृष्टि निर्माण भी दार्शनिक लोग चौबीस तत्वों से मानते हैं। अतः चौबीस अक्षरों का छन्द हो जाने पर उस छन्द की विश्व के निर्माण के साथ साम्यता हो जाती है। इस अवस्था में जिस प्रकार हम प्रकृति के चौबीस तत्वों से विश्व की रचना और अपनी रचना को आबद्ध पाते हैं उसी प्रकार हम इस गायत्री छन्द से अपने को और विश्व को भूल रूप से आबद्ध पाते हैं।

छन्दों की प्रकारान्तर से रचना

इसके अतिरिक्त छन्दों का एक क्रम और भी चलता है। जैसे तालाब में केन्द्र से या किसी स्थान पर आघात से लहरें उठती है और समस्त क्षेत्र में उत्तरोत्तर व्याप्त होती जाती है, उसी प्रकार आधार भूत छन्द एक केन्द्र से उत्क्रान्ति करता हुआ विश्व में उतरोत्तर व्याप्त हो जाता है, और उसकी व्याप्ति के स्तर या क्षेत्र विविध छन्द या नामों से सम्बोधित हो जाते हैं।

यह छन्द रचना क्रम सृष्टि की रचना में तत्वों के घनत्व का द्योतक है यह क्रम ४ अक्षरों के प्रथम छन्द– ''मा'' से प्रारम्भ होता है और प्रत्येक छन्द ४–४ की वृद्धि से १०४ अक्षरों तक पहुँच जाता है। इसमें २६–२६ छन्दोस्तरों और १०४ मात्रा या अक्षर स्तरों में ब्रह्माण्ड विभक्त हो जाता है। इन छन्दों में द्रतद्रव्य किन–कन कारण द्रव्यों को प्राप्तकर सूक्ष्माति सूक्ष्म होकर अन्तिम सप्त स्तरों कृति, प्रकृति आकृति, संस्कृति, अभिकृति और उत्कृति अवस्था तक पहुंच जाता है यह ज्ञात हो जाता है।

वैज्ञानिक जन भी सारे विश्व में सात आयाम् को मानते हैं जिसका उद्गम 'मा' से है इसे माता रूप ईश्वर भी समझा जा सकता है। वेद विज्ञान के अनुसार इस सात (भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्) आयाम के विस्तार में सारी सृष्टि ओत प्रोत है।

ये अवस्थायें सूक्ष्म अपोमय, तरल तरंगयुक्त होती है जो ब्रह्माण्ड को चारों ओर से वेष्टित करती रहती हैं। अधमर्षण मंत्र– ''समुद्रादर्णवादधि०–'' में जिस समुद्र और अर्णव का उल्लेख है, उनका जल की सूक्ष्म अवस्थाओं से सम्बन्ध है जिनसे सृष्टि में सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, संवत्सर आदि सभी की रचना होती है। वे ही स्थितियाँ– सिन्धुः सलिलम्, अम्भः, गगनम्, अर्णवः, आपः समुद्रः इत्यादि छन्द, नामों से वस्तु जात की उतरोत्तर सूक्ष्मातिसूक्ष्म अपोमय, तरलतरंममय प्रकृतियां हैं जो ब्रह्माण्ड को अपने गर्भ में धारण कर रही हैं। इसी प्रकार विश्व का विभाजन छन्दों में अनेक प्रकार से हो जाता है।''

छन्दों का उपादान कारण प्राण होते हैं। प्राण एक अतिसूक्ष्म तत्व है उसके तीन स्तर होते हैं। वायु में जो प्राण है उससे सूक्ष्म 'सूक्ष्म शरीर' का प्राण है क्योंकि उसी प्राण के द्वारा स्वांस–प्रस्वांस की क्रिया इस देह में होती है। उससे सूक्ष्म जो ईश्वर के निकट है वह सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, उस प्राण से ही सारी सृष्टि का धारण, पालन और पोषण हो रहा है।

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक वेदविज्ञान भाष्यम पुस्तक में लिखे हैं कि समस्त सृष्टि विभिन्न तरंगों से भरी है। जो ठोस दिखाई देते हैं वे भी अनेक तरंगों से युक्त हैं, ये तरंग ही प्राण है। सूर्य तो प्राणों का भद्रार है।

सूर्य की किरणें प्राणों के ही तरंग हैं ये तरंग ही छन्द हैं, इन छन्दों से ही ध्वनि उत्पन्न होती है। छन्दों की ध्वनि से ही ऋषियों का ध्यानावस्था में ईश्वरीय ज्ञान वेदों के मंत्र बीज रूप में प्राप्त हुआ।

उदाहरण के लिये जैसे संगीतज्ञ ने सीतार के तार तरंग से 'सा' जैसा स्वर उत्पन्न किया तब शिष्य ने ध्यान से उसे श्रवण कर अक्षर के रूप में 'सा' कहा। इसी प्रकार शिष्य को जब सातो ध्वनि के अनुसार सातों स्वर एवं व्यंजन का ज्ञान हो गया तब वह विभिन्न प्रकार के राग–रागिनी का गायन करने लगा।

इसी प्रकार मानव उत्पत्तिकाल में ऋषियों को जब अन्तर ध्वनि ईश्वरीय ओम् से ज्ञान प्राप्त हुआ तब ध्यानावस्था में उन पवित्रात्माओं को वेद मंत्रों का ज्ञान होने लगा। तात्पर्य यह कि जिस प्रकार सभी बालक संगीत में, गणित में डाक्टर या विज्ञान के ज्ञाता नहीं होते उसी प्रकार आदि मानवों में उन जैसी योग्यता नहीं

शेष पृष्ठ......८

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा हापुड़ के संयुक्त तत्त्वावधान में

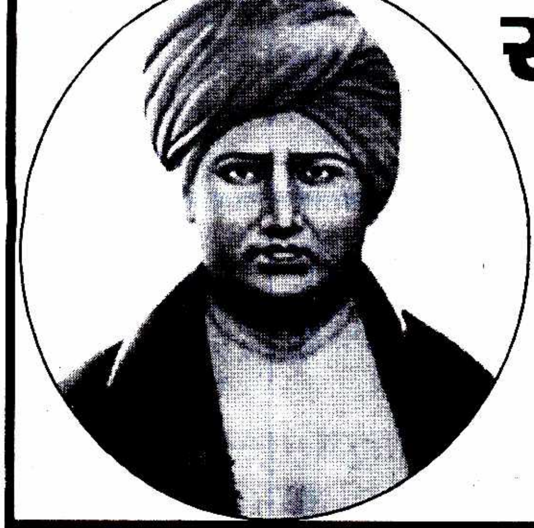

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

8, 9, 10(शुक्र, शनि,रवि) नवम्बर, 2013

स्थान-कमलावती मदनलाल सरस्वती विद्या मन्दिर, नक्का कुँआ, मेला रोड, गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़)

आपको जानकर हर्ष होगा कि उत्तर प्रदेश में आर्य समाज के कार्य को गति देने के लिए एवं भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण हेतु अच्छे संस्कारों को जागृत करने के लिए नारी जागरण तथा यज्ञ योग के लिए आस्था पैदा करने के लिए प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं। आपकी उपस्थिति आपके परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण उत्पन्न करेगी तथा प्रदेश में आत्मीय वातावरण से वैदिक संस्कृति की रक्षा होगी इस कार्यक्रम की सफलता के लिए आर्य जगत् के उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान, उपदेशक, एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप अपने-अपने क्षेत्रों से अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें।

कार्यक्रम प्रतिदिन

प्रातः 5:30 बजे से 7:00 बजे तक - योग साधना, आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण द्वारा रोगों की निवृत्ति

प्रातः 7:30 बजे से 10:00 बजे तक- यज्ञ, भजन एवं आध्यात्मिक प्रवचन उपदेश

मध्याह्न 10:00 बजे से 12:30 बजे तक- सम्मेलन एवं सम्मान समारोह

दोपहर 12:30 बजे से 5:30 बजे तक- सम्मेलन एवं व्यायाम प्रदर्शन

रात्रि 6:00 बजे से 9:00 बजे तक- भजन, उपदेश एवं सम्मेलन

निवेदक

देवेन्द्रपाल वर्मा	धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	डॉ. धीरज सिंह	डॉ. विकास आर्य
सभा प्रधान	सभा मंत्री	सभा कोषाध्यक्ष	जिला प्रधान
मो. 09412678571	मो. 09837402192	मो. 09412744341	मो. 09837791132

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२–२२८६३२८
प्रधान–०९४१२६९८५७१, मंत्री–०९८३७४०२१६२, सम्पादक–९५३२७४६६००
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

पृष्ठ.....६ का शेष

थी इसलिये उन्हें वेद विद्या की प्राप्ति नहीं हुई। केवल उन्हीं चार ऋषियों को ध्यानावस्था में 'प्राणों के तरंग छन्दों से' ज्ञेय एवं ज्ञान का जिसे वैदिक भाषा में ऋषि या देवता एवं प्राण कहे जाते हैं उनसे उनका जब सम्बन्ध होने लगा तब उन्हें वेदों के मंत्रों का ज्ञान होने लगा।

छन्द का स्वरों से सम्बन्ध कैसे होता है आचार्य वेदश्रमी जी 'वैदिक सम्पदा' में लिखें है कि – "स्वर में रस होता है। इस की विविधता से स्वरों की विविधता प्रकट होने लगती है और स्वरों की विविधता से छन्दों के भेद भी प्रकट होने लगते हैं।"

गायत्री, उष्णिगादिसप्त छन्द स्वर भेद के साथ है। स्वर सात रूप में विभक्त हो जाने से छन्दों के भी सात भेद हो जाते हैं। षड्ज का गायत्री से, ऋषभ का उष्णिक् से, गन्धार का अनुष्टुप से, मध्यम का बृहती से पंचम का पंक्ति से, धैवत का त्रिष्टुप से और निषाद का जगती से सम्बन्ध है। ये सप्त स्वर अपने छन्द से सम्बन्धित हैं। स्वरों को छन्द रूप से मात्रा कालादि में आबद्ध होना अनिवार्य हो जाता है। अतः छन्द रूप के प्रकट होने पर स्वर, व्यंजनों के साथ अपनी स्थिति बना लेते हैं।

छन्द से मंत्र का दर्शन

देवता एवं ऋषि से युक्त छन्द अपने–अपने विविध क्षेत्रों के अनुसार अपने–अपने केन्द्र पर जिस प्रकार गति करते हैं उससे उनमें जो स्वर, संगीतमय ध्वनि उत्पन्न होती है, वह उस क्षेत्र का शाश्वत शब्द–नित्य शब्द – होता है। वह शाश्वत शब्द अपने जिस आश्रम से, जिस क्षेत्र में प्रकट होता है, उसमें उसका रहस्य ज्ञान भरा है। नित्य या शाश्वत शब्दों के अर्थ भी नित्य ही है। ब्रह्मण के विविध क्षेत्रों के केन्द्रों में जो शाश्वत ध्वनि व्याप्त होकर ज्ञान प्रदान करा रही है, वह ध्वनि एवं ज्ञान अपने आदिमूल परमेश्वर के आश्रम में ही है। अतः वही परमात्मा उस वाणी का दाता, प्रकटकर्त्ता एवं ज्ञान का आश्रय है। इस प्रकार जो विचार या ज्ञान देवता, ऋषि, छन्द एवं स्वर से आबद्ध होकर प्रकट होगा वह हमारे मनन का विषय होने से मंत्र संज्ञकही है और ऐसा मंत्र समूह उस परम पुरुष, परमात्मा का ही होगा अन्य किसी का नहीं।

(वैज्ञानिकों ने उस अत्यन्त सूक्ष्म ध्वनि का भी साक्षात्कार किया है जो पूरी 'ओम्' की ध्वनि का प्रति रूप मानी जा सकती है। आज जिस बात को विज्ञान सिद्धकर रहा है उस बात को हमारे ऋषियों ने लाखों वर्ष पहले ही जान लिया था)

दैवीवाणी में वेदों का प्रकट होना–

ब्रह्माण्ड की रचना में प्रकृति के माध्यम से जिस ज्ञान विज्ञान या विद्याओं का दर्शन होता है वे नाम रूप से विभक्त हैं। नाम शब्दमय हैं। शब्द अर्थमय हैं। नाम और रूप का स्थिति या उसका जीवन अपने अन्दर से ध्वनि को प्रकट करता है। इस प्रकार ब्रह्माण्ड के ज्ञान के लिये, ब्रह्माण्ड में अपने अपने क्षेत्र में जो एक अव्यक्त भाषा में ध्वनि प्रकट हो रही है उसको पिण्ड में–मानुषी देह के माध्यम से प्रकट किये बिना जीवन अपूर्ण ही रह जाता। अतः परमात्मा ने ब्रह्माण्ड के ज्ञान को मनुष्यों के हित के लिये दैवी वाक् में आदि सृष्टि में चार ऋषियों के माध्यम से उस वेद को वैखरी वाणी में भी प्रकट किया। इस वेद वाणी द्वारा ऋषियों ने ब्रह्माण्ड में दैवत तत्वों को उनके ऋषि अर्थात् तर्कनामय ज्ञान शक्ति से अपने अपने क्षेत्र में दर्शन करने की सामर्थ प्राप्त की। यही वेद वाणी–ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान भेद से ऋक्, यजुः, साम एवम् अथर्व नाम से लोक में व्यवहृत हुई।

प्रश्न – आदि सृष्टि में तो सभी मानव पशु जैसा जंगली थे उनमें श्रेष्ठ देव मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हो गई?

उत्तर – जैसे अनाड़ी माता–पिता के दश सन्तान, दशो अनाड़ी नहीं होते उनमें कुछ अच्छे स्वभाव एवं तीव्र बुद्धि वाले भी होते हैं, उसी प्रकार मानव उत्पत्ति काल में सभी जंगली नहीं थे, कुछ पूर्वपुण्यात्मा भी थे उनसे अलग मानसरोवर आदि स्थानों में रहते थे।

प्रश्न– वे सभ्य लोग बिना शिक्षा के कैसे ज्ञानी हो गये ?

उत्तर – पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय 'जीवात्मा पुस्तक' के पृ० १६१ में लिखे हैं कि – भिन्न–भिन्न बच्चों में भिन्न–भिन्न प्रवृतियाँ विकास के भिन्न–भिन्न तत्वों पर मिलती हैं। कुछ बच्चे आरम्भ से ही शान्तिप्रिय कुछ लड़ाकू कुछ बुद्धिमान, कुछ बुद्धिहीन, कुछ गणित के प्रेमी कुछ संगीत में प्रवीण पाये जाते हैं। यह क्यों होता है? इसका मुख्य कारण यही है उन्होंने पूर्वजन्म में एक विशेष प्रवृत्ति का विशेष परिणाम में विकास कर लिया था। अब उसके आगे उन्नति करनी है। प्रायः यह प्रवृत्तियां सुप्त सी रहती है और थोड़े से ही संकेत से वे जागृत हो जाती है। मास्टर मदन जैसे कई बच्चे– चार–पांच वर्ष की अवस्था में संगीत के बड़े भारी प्राप्ति सिद्ध हुए। रामानुज महाशय बिना सीखे हुए ही गणित में ऐसे प्रवीण थे कि बड़े–बड़े गणितज्ञ दांतो तले उंगली दबाते थे। यह गणित या संगीत का ज्ञान उन्होंने इस जन्म में प्राप्त नहीं किया बल्कि पिछले जन्म के संस्कार होगा। आरम्भ में यह ज्ञान सुप्त सा था किसी अवसर पर जागृत हो गया।

जी०टी०वी, में रात ६:३० बजे दि० २८.२६.०६ को हीरोहप्रा, सारेगमप, में बालकों का संगीत प्रोग्राम मैं देख रहा था, उसमें एक आठ वर्ष का (इन्दौर, म०प्र०के) स्वरित शुक्ला, नाम के लड़के में एक विशेषतायें थी कि चाहे जिस किसी गाने का सरगम बोल देता था वहां उसके जजों ने कहा कि यह बालक एक अजूबा है। यह उसके पूर्व का ही संस्कार है जो न जाने कैसे उन अनजान गानों का भी सरगम बोल देता था।

दिनांक ७,४,२००७ को रात ८ बजे 'जी.टी.वी.' में दिखाया जा रहा था कि महाराष्ट्र राज्य के एक २ वर्ष ५ मास का 'परम' नामक बालक ने संसार के नक्शे में कौन देश कहा है ? जिन देशों को जिस किसी ने पूछा उसे वह तुरंत उंगली से दिखा देता था और दिखाकर हंसने लगता था। इसे पूर्व जन्म का संस्कार नहीं तो और क्या कहा जायेगा।

इसी प्रकार आदि ऋषियों से इतनी दैवी प्रतिभा आ गई थी कि इयं पित्र राष्ट्रयेत्तग्नेप्रथमाय जनुषे भुवनेषु उस ईश्वरीय उज्ज्वल ज्ञान जो ब्रह्माण्ड में विद्यमान था उन ऋषियों को ही प्राप्त हुआ।

–श्री हरिश्चन्द्र वर्मा, मु० पो०मुराई

वैदिक आर्य महासम्मेलन
आर्य समाज, सिरसा–प्रयाग

गत् वर्षो की भाँति इस वर्ष भी दिनांक ५, ६, ७ नवम्बर, २०१३ को स्थान–दशमी का बाग, सिरसा, इलाहाबाद के प्रांगण में वैदिक आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें वेदों के मर्मज्ञ विद्वान डॉ अशर्फी लाल शास्त्री, सुश्री सरस्वती बहन एवं दो ब्रह्मचारणी छात्राएं (वाराणसी) श्री सत्यमुनि वानप्रस्थी (मिर्जापुर) एवं अन्य मूर्धन्य विद्वान आ रहे हैं। –मंत्री

आर्य समाज, अफजलगढ़ बिजनौर द्वारा धर्म जागृति महोत्सव

दिनांक १८ से २० अक्टूबर, २०१३ तक आयोजित

आर्य समाज अफजलगढ़ बिजनौर ने दिनांक १८ से २० अक्टूबर, २०१३ तक धर्म जागृति महोत्सव का आयोजन किया है जिसमें नित्य प्रातः ७:३० से १० बजे तक यज्ञ भजन अपराहन २ से ५ बजे तक भजन व्याख्यान रात्रि ७:३० बजे से १०:३० बजे तक भजन प्रवचन होंगे। २० अक्टूबर को प्रातः १०:३० बजे से अपराहन १ बजे तक आचार्य विष्णु मित्र आर्य वैदिक प्रवक्ता के वेदोपदेश एवं श्री पं. मामचन्द्र आर्य पथिक पं. विक्रम देव आर्य के भजनोपदेश होंगे। –डॉ. अशोक रस्तोगी

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई पुरस्कार हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई द्वारा वर्ष २०१३–१४ के लिए वेद वेदांग पुरस्कार वेदोपदेशक पुरस्कार एवं श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार, पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार, श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान् पुरस्कार, श्रीमती प्रेम लता सहगल युवा महिला पुरस्कार, श्रीमती भागीदेवी छावरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार, श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कार श्री हरभगवान दास गांधी मेधावी पुरस्कार हेतु विद्वानों के नाम व परिचय उनके विशिष्ट कार्यों के विवरण दिनांक ३०.६.१३ तक आमंत्रित किये गये हैं।

वेद प्रचार शिविर का आयोजन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद–बिजनौर गत वर्षो की भांति कार्तिक पूर्णिमा गंगा स्नान मेला स्थल दारानगर गंज में १५, १६, १७ नवम्बर को वेद प्रचार पर शिविरका आयोजन कर रही है। जिसमें आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान व भजनोपदेशकों के आने की स्वीकृति प्राप्त हो गई है। आगन्तुकों के रहने व खाने का प्रबन्ध है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मेला स्थल दारानगर गंज में आर्य समाज शिविर में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें व धर्म लाभ उठायें।

कार्यक्रम–

यज्ञ, भजन व प्रवचन	प्रातः ५ बजे से ११ बजे तक
भजन व प्रवचन	अपराहन २ बजे से सायं ५ बजे तक
भजन व प्रवचन	रात्रि ८ बजे से रात्रि ११ बजे तक

डॉ० वेद प्रकाश शास्त्री
प्रधान

रुद्रपाल सिंह आर्य
मंत्री

इन्दुभूषण कश्यप का निधन

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ के सदस्य श्री इन्दुभूषण कश्यप का कुछ कालिक अस्वस्थता के पश्चात् दिनांक १५.१०.१३ को प्रातः ६:३० बजे दिल्ली के अस्पताल में निधन होगा। उनका अन्तिम संस्कार देहली में ही पूर्ण किया गया।

उनके लखनऊ स्थित आवास पर दिनांक १६.१०.१३ को सायं ४:५० बजे से एवं १७–१८.१० को प्रातः ६ बजे से १०:३० बजे तक शान्ति यज्ञ हुआ तथा १८.१० सायं आर्य समाज श्रृंगार नगर में शोक सभा व उठाला की रश्म सम्पन्न हुयी।

शोक समाचार

बड़े ही दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि श्रीमती पूनम (जो कि डॉ. भानु प्रकाश आर्य की सलहज थीं) का देहावसान दिनांक ६.१०.२०१३ को प्रातः १०:३० बजे हो गया वे उ.प्र. को–आपरेटिव विभाग में सेवारत थीं। इनकी अन्त्येष्टी एवं शान्ति यज्ञ आचार्य विश्ववृत्त शास्त्री द्वारा वैदिक ढंग से [illegible]ते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति व परिवार के सदस्यों को मन शान्ति व धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।